आय सृजन गतिविधि

व्यवसाय योजना

केंचुआ खाद बनाना

2023-24

स्वयं सहायता समूह का नाम	:	अंजलीस्वयं सहायता समूह
ग्रामीण वन विकास समिति का नाम	:	चटीरा माता
फील्ड टेक्निकल यूनिट का नाम	:	स्वारघाट
डीएमयू/वन मंडल का नाम	:	बिलासपुर
एफसीसीयू / सर्कल	:	बिलासपुर
हि प्र व पा त प्र और आ सु प जाईका के द्वारा प्रायोजित		द्वारा तैयार:- डीएमयू बिलासपुर, एफटीयू स्वारघाट और अभिषेक स्वयं सहायता समूह

विषयसूची

विवरण	पेज
परिचय	3-4
कार्यकारी सारांश	4
स्वयं सहायता समूह का विवरण	5-8
गांव का भौगोलिक विवरण	8-9
उत्पादन प्रक्रिया का विवरण	9-10
आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण	10-11
विपणन/बिक्री का विवरण	11
स्वोट अनालिसिस	11
सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण	11-12
अर्थशास्त्र का विवरण	13-16
फंड के स्रोत	16
निगरानी विधि	17
परियोजना की कुल लागत	18
अनुलग्नक	19-20

परिचय

हिमाचल प्रदेश एक राजसी पौराणिक भूभाग है जो अपनी सुंदरता शांति समृद्धि संस्कृति और धार्मिक विरासत के लिएप्रसिद्ध है। इस प्रदेश में पुरातन काल से ही देवी देवताओं की अत्यधिक मान्यता श्रद्धा और उन परअटूटविश्वास है जिसके कारण इसे देवभूमि के संबोधन से भी पुकारा जाता है। प्रदेश में विविध भोगोलिक स्थितियां है तथा जहां पंजाबप्रांत की सीमा से लगते उना कांगड़ा सोलन और सिरमौर जिले के कुछ मैदानी भूभाग समुद्र तल से 300 मीटर कीऊंचाई पर स्थित है वही चंबा लाहौल स्पीति और किन्नौर जिले के हिमालयी क्षेत्र समुद्र तल से 6816मीटर की ऊंचाईपर स्थितहै। इसी कारण प्रदेश की जलवायु में भी अत्यधिक विविधता है। हिमाचल प्रदेश में जहां ऊँचे पहाड़ है वही संकरी घटियां भी है प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 55673 वर्ग किलोमीटर है। इसकी आबादी लगभग 7.5 मिलियन है । प्रदेश के हिमालयी भू भाग से कई नदियाँ निकलती है जो निरंतर बहती रहती है।

प्रदेश की लगभग 90% आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहती है तथा अपनी आजीविका के लिए अधिकतर कृषि बागवानी पशुपालन तथा वनों से प्राप्त गैर कास्ट वनउत्पादों पर निर्भरहै। प्रदेश में जल विद्युत और पर्यटन उद्योग राजकीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। प्रदेश में कई प्रसिद्ध एवं पुरातन मंदिर है। जहां बाहरी राज्यों के लाखों लोग श्रद्धा और विश्वास के साथ आते हैं तथा प्रदेशको प्रत्यक्षव अप्रत्यक्ष रूप से आमदनी होती है। प्रदेश में कई सुंदर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है जहां पर बाहरी प्रदेशों से और विदेशी यात्री सकून प्राप्ति के लिए लाखों की संख्या में आते हैं और प्रदेश की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में विशेष भूमिका निभाते है। प्रदेश में फल उत्पादन विशेष कर सेब के बगीचे भी,इसकी आर्थिकी को चार चाँद लगते है इस राज्य की सेब राज्य के रूप में भी विशेष पहचान है। हिमाचल प्रदेश के वन एवं परिस्थितिक तंत्र समृद्ध जैव विविधता के भंडार हैं और नाजुक ढलान वाली भूमि को संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन चिरकाल से ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका के प्राथमिक स्त्रोत रहे हैं और ग्रामीण लोग अपनी आजीविका सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए वन संसाधनों पर निर्भरहै। लेकिन कठोर वास्तविकता यह है कि वनों के अत्यधिक दोहन चारा,ईंधन व् गैर कास्ट वन उत्पादों की अत्यधिक निकासी तथा वन अग्नि की घटनाओं आदि के कारण तथा विकास कार्यों के लिए वन भूमि हस्तांतरण आदि से वनों का निम्नीकरण हुआ है। जिसकी भरपाई की आवश्यकता महसूस की गई है तथा इसके लिए कई वन परियोजनाएं संचालित की जा रही है जिनमें से हिमाचल प्रदेश वन परिस्तिथिकी प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जायका वित् पोषित) भी एक है जिसके एक विशेष घटक आजीविका सुधार के अंतर्गत सात जिलों के कुछ चयनित क्षेत्रों में वन विकास समितियों का गठन करके करके उनमें आजीविका सुधार हेतु स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा रहा है तथा इन समूहों, विशेषकर महिला समूहो को आजीविका से जोड़ा जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश का बिलासपुर जिला स्वतंत्रता से पूर्व कहलूर रियासत के नाम से प्रसिद्ध एक सवायत रियासत थी जो वर्ष 1952-53 में भारतीय संघ में तत्कालीन हिमाचल प्रदेश के छठे जिला के रुप में सम्मिलित हुई थी इसके अंतिम शासक राजा आनंद चंद थे बिलासपुर जिला पूरा बिलासपुर वन मंडल के अंतर्गत आता है। इस वन मंडल में चार वन परिक्षत्रो, घुमारवीं, सदर, झंडूत्ता, व स्वारघाट में 26वन विकास समितियों का गठन किया जा चुका है और इसके आधीन 56 स्वंय सहायता समूह गठित किए गए हैं जिनको आजीविका वर्धन गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है।

बिलासपुर जिले का सूक्ष्म परिचय देना भी अति आवश्यक है। बिलासपुर जिले का संपूर्ण भोगोलिक क्षेत्रफल सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार 1167 वर्ग किलोमीटर है तथा राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार 1155 वर्ग किलोमीटर है। सतलुज नदी जिले के लगभग मध्य से गुजरती है जिस पर भाखड़ा के निर्माण के बाद कृत्रिम झील बनी है जिसे गोविन्द सागर के नाम से जाना जाता है। भाखड़ा बांध तथा इस झील के निर्माण में इस जिले की बहुत सारी उपजाऊ भूमि (लगभग 200 वर्ग किलोमीटर)निर्माण में जल मगन हो गई है और कई गांव को उजाड़ना पड़ा था यहाँ तक कि इस पूर्व रियासत के मुख्यालय और पुरातन शहर को भी उजड़ना पड़ा था जिसे वर्तमान जिला मुख्यालय के तौर पर नए सिरे से बसाया गया है। जिले के पंजाब की सीमा से लगते क्षेत्र सुमद्र तल से 300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है जबकि सोलन जिले से लगती सीमा के कुछ क्षेत्र 1900 मीटर तक की ऊंचाई पर भी स्थित है।जिले के घुमारवी,जुखाला और बरठी के इलाके समतल है तो बाकि के इलाके मध्यम से अधिकतम ढलान वाले है। जिले की उतरी सीमा हमीरपुर जिले और मंडी जिला के साथ लगती है तथा पूर्व तथा दक्षिण में सोलन तथा पश्चिम में ऊना और पंजाब प्रांत के रूपनगर जिला की सीमाएं लगती है। जिले का अधिकतम भाग सतलुज नदी तथा गोविंद सागर झील का जल ग्रहण क्षेत्र है। गोविंद सागर झील में सीर, सुकर सरयाली,गम्बर, गम्ब्रोला और आली खड्डे समायोजित होती है इस जिले में सात चिर परिचित पर्वत श्रीखलाएं है जिन्हें सात धारों के रूप में जाना जाता है। यह है, :- 1.नैना देवी धार 2. कोट धार 3. झंजिआर धार 4.

रतन पुर धार 5. तिउन धार 6. बंदला धार 7.बहादुर पुर धार। जिले में ऊँची चोटियाँ को छोड़ कर जहां सम शितोषण जलवायु होता है, शेष भाग में गर्मियों में अत्यधिक गर्मी और सर्दियों में अत्यधिकसर्दी और कोहरा पड़ता है। जिले में ओसतन 1270 मि० मी० वार्षिक वर्षा रिकॉर्ड की गई है और ओसतन 61 दिन रिकॉर्ड की गई है जिले की अधिकतम कृषि भूमि वर्षा पर निर्भर है केवल कुछ स्थानों पर खड्डो और झील से पानी को पंप द्वारा उठाकर सिंचाई की व्यवस्था की गई है। जिले में मक्की,गंदम, धान की फसल मुख्यता उगाई जाती है तथा कई स्थानों पर दाल,हल्दी सब्जी आदि भी उगाई जाती है। हल्दी जिले का ब्रांड प्रोडक्ट घोषित किया गया है। गोविंद सागर झील में मछली पालन पर भी कई लोगों की आजीविका निर्भर है जिले में कृषि को पशुपालन तथा दुग्ध उत्पादन की भी सपोर्ट है, और लोगो की आजीविका का मुख्य स्रोत है जिले में भाखड़ा बांध, कोल डेम और अपने समय में एशिया का सबसे ऊंचा पुल कन्द्रोर पुल जिले के जाने-माने सिविल अभियांत्रिकी के मशहुर नमूने है।जिले में स्थित नैना देवी मंदिरतथा शहतलाई में बाबा बालक नाथ तपोस्थली प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटन स्थल है जहां हर वर्ष लाखों लोग दर्शनार्थ श्रद्धा से आते हैं जिले में स्थित एसीसी सीमेंट फैक्ट्री बरमाना व बागा में स्थित अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्रियों का भी जिले की आर्थिक प्रगति में विशेष योगदान रहा है किरतपुर-मनाली राष्ट्रीय उच्च मार्ग इस जिले से होकर व जिला मुख्यालय बिलासपुर से होकर गुजरता है जिससे ऊपरी क्षेत्रों मनाली लाहौल स्पीति तथा लेह तक की यात्रा करने वाले लाखों की संख्या में पर्यटक आते जाते हैं। जिले में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान व हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना से जिले की आर्थिक और सामाजिक प्रगति की संभावना प्रबल हुई है। फोरलेन राष्ट्रीय राजमार्ग किरतपुर मनाली और निर्माणाधीन रेलवे लाइन के निर्माण कार्य पूर्ण होने पर जिले की स्थिति और भी सुदृढ़ होने की संभावना है।

कार्यकारी सारांश

ग्राम वन विकास समिति चटीरा माता म्योठ-

म्योठवार्ड, ग्राम पंचायत टरवाड के अंतर्गत विकासखंड स्वाहन तहसील श्री नैना देवी जिला बिलासपुर में स्वारघाट से लगभग 22किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जो कि वन परिक्षेत्र स्वारघाट की स्वाहन बीट के अंतर्गत आता है। इस वार्ड की एक वन ग्राम विकास समिति गठित की गई जिसे हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जायका वित्त पोषित) के अधीन संचालित किया जा रहा है। यहवीoएफoडीoएसo जिला व मंडल मुख्यालय बिलासपुर से 65किलोमीटर की दूरी पर स्थित है

ग्राम वन विकास समिति की महत्वपूर्ण विशेषताएं:-

कुल परिवारों की संख्या =158 (109 सामान्य,49 अनुoसुoजाति)

बीoपीoलo परिवारों की संख्या=22

कुल जनसंख्या = 720

भूमि प्रयोग:-

कुल क्षेत्रफल= 264 है०

कृषि भूमि =86 है०

वन भूमि =162 है०

ग्राम वन विकास समितिचटीरा माता म्योठके अंतर्गत आजीविका सुधार गतिविधियों के लिए दो स्वयं सहायता समूहों को अपनाया गया । जिसमें से एक स्वयं सहायता समूह का नाम अभिषेक व् दूसरा अंजली है। यहां हम अंजलीस्वयं सहायता समूह की व्यापार योजना बनाने के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

स्वयं सहायता समूह अभिषेकका विवरण:-

अंजलीस्वयं सहायता समूह कोअप्रैल 2021में ग्राम वन विकास समिति चटीरा माता म्योठ के अंतर्गत कौशल और क्षमताओं को उन्नत करके आजीविका सुधार सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से अपनाया गया है। यह समूह सीमांत किसान परिवारों की कमजोर आर्थिकी वाले परिवारों की 8महिलाओं का बनाया गया है। यद्यपि समूह की सभी महिलाये कृषि एवं पशुपालन के कार्य से जुड़ी हुई है लेकिन भूमि जोत छोटे होने के कारण व सिंचाई सुविधा ना होने के कारण उत्पादन का स्तर संतृप्ति के करीब पहुंच गया है। इसलिए अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्होंने आगे बढ़ने का फैसला किया। केंचुआ खाद बनाने के कार्य को व्यवासिक रूप में करने का निर्णय लिया जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है।। समूह की महिलाएं ₹100 प्रतिमाह की दर से प्रति सदस्य योगदान भी कर रही हैं समूह फोटो निम्न प्रकार:-

सदस्यों का विवरण निम्न प्रकार:-

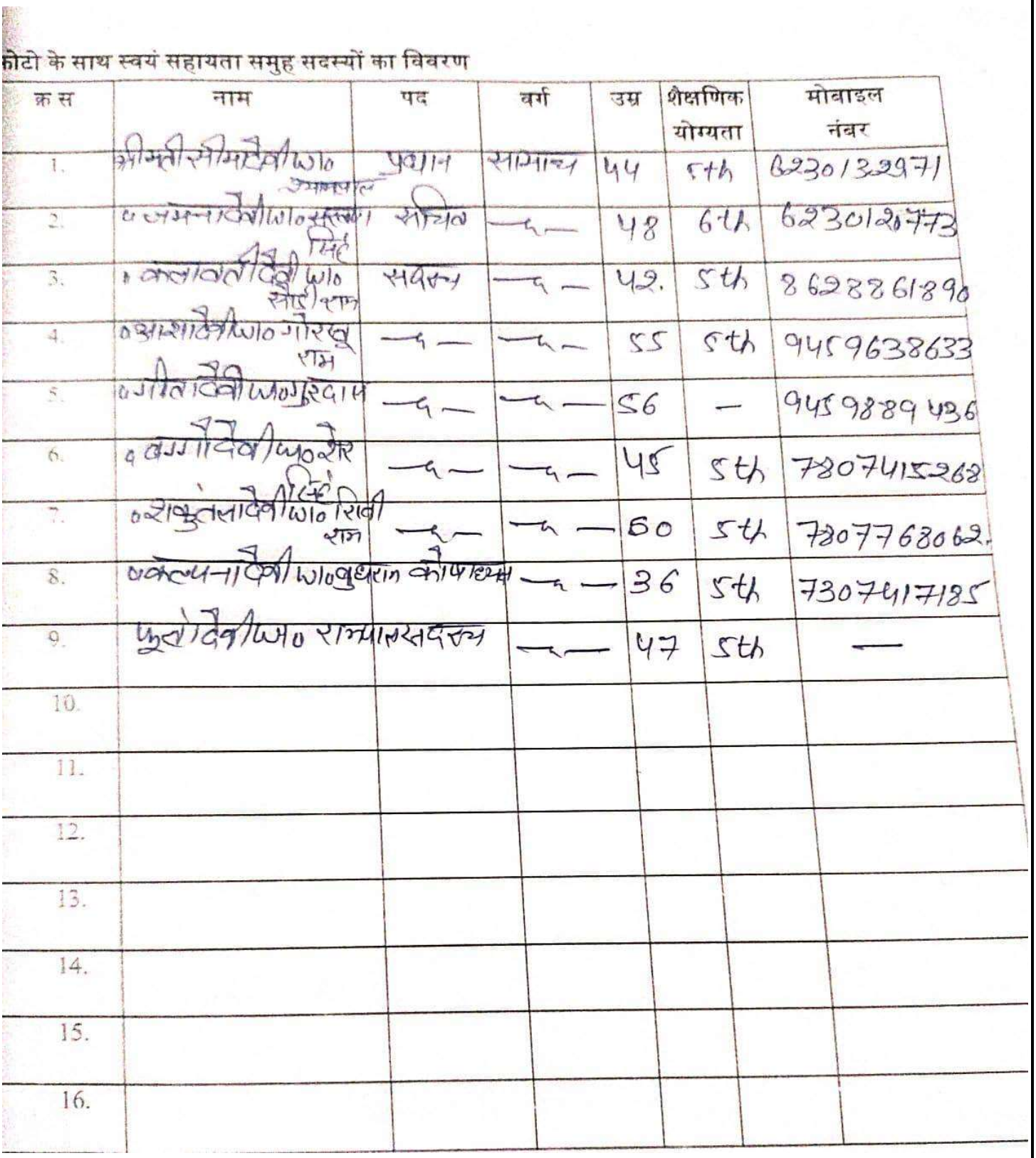

फोटो के साथ स्वयं सहायता समुह सदस्यों का विवरण

क्र स	नाम	पद	वर्ग	उम्र	शैक्षणिक योग्यता	मोबाइल नंबर
1.	श्रीमती सीमा देवी W/o श्यामपाल	प्रधान	सामान्य	44	5th	6230132971
2.	जमुना देवी W/o सत्यपाल सिंह	सचिव	—"—	48	6th	6230120773
3.	कलावती देवी W/o सोहै राम	सदस्य	—"—	42.	5th	8628861890
4.	आशा देवी W/o गोरखु राम	—"—	—"—	55	5th	9459638633
5.	गीता देवी W/o गुरदास	—"—	—"—	56	—	9459889436
6.	बन्नो देवी W/o शेर सिंह	—"—	—"—	45	5th	7807415268
7.	शकुंतला देवी W/o रिखी राम	—"—	—"—	60	5th	7807768062.
8.	कल्पना देवी W/o बुधराम	कोषाध्यक्ष	—"—	36	5th	7307417185
9.	फुलो देवी W/o रामपाल	सदस्य	—"—	47	5th	—
10.						
11.						
12.						
13.						
14.						
15.						
16.						

फोटो के साथ स्वयं सहायतासमूह के सदस्यों का विवरण

शीला देवी (प्रधान)

कर्मी देवी (सचिव)

रीना देवी (कोषाध्यक्ष)

गुरनामो देवी (सदस्य)

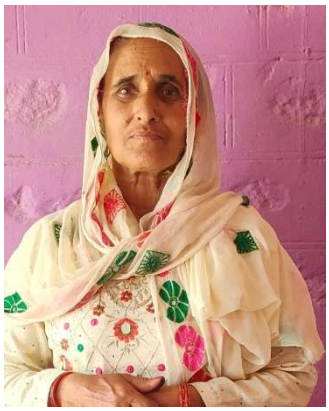
निक्कीदेवी(सदस्य)

सत्या देवी(सदस्य)

धर्मीदेवी(सदस्य)

कमलादेवी(सदस्य)

अंजली स्वयं सहायता समूह कुलाह:-

स्वयं सहायता समूह का नाम	::	अंजली
स्वयं सहायता समूह का एमआई कोड संख्या	::	-
ग्रामीण वन विकास समिति का नाम	::	चटीरा माता म्योठ
फील्ड टेक्निकल यूनिट का नाम	:	स्वारघाट
डीएमयू/ वन मंडल का नाम	::	बिलासपुर
गांव	::	म्योठ
विकास खंड	::	स्वाहण
ज़िला	::	बिलासपुर
स्वयं सहायता समूह में सदस्यों की कुल संख्या	::	8
गठन की तिथि	::	जनवरी,2010
बैंक का नाम और विवरण	::	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
बैंक खाता संख्या	::	65093540397
स्वयं सहायता समूह की मासिक बचत	::	रु.8000/-माह
कुल बचत	::	45000/-
कुल अंतरऋण-	::	-
नकद ऋण सीमा	::	-
चुकौती स्थिति		-

गांव का भौगोलिक विवरण:-

जिला मुख्यालय से दूरी	:	65किमी
मुख्य मार्ग से दूरी	: :	5कि०मी० लगभग
स्थानीय बाजार का नाम एवं दूरी	:	श्री नैना देवी जी 12कि०मी०, स्वारघाट22 कि०मी०, किरतपुर28कि०मी०, लगभग

प्रमुख शहरों के नाम जहां उत्पादों को बेचा जायेगा	: :	श्री नैना देवी जी 12कि०मी०, स्वारघाट 22 कि०मी०, किरतपुर 28कि०मी०, लगभग
पिछली और अग्रिम कड़ियों की स्थिति	: :	पिछली कड़ी में प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केंद्र बिलासपुर स्थित बरठीं द्वारा व उद्यान विभाग द्वारा प्रदान किया जायेगा । अग्रिम कड़ी में उत्पाद की विक्री हेतु विभन्न विभागों व् उद्योगों से अनुबन्ध किया जायेगा ।

सरलउत्पादनतकनीकों,पारिस्थितिक,आर्थिकऔरइससेजुड़ेमानवस्वास्थ्यलाभोंकेकारणकेंचुआखादबनानादेशमेंएकमजबूतमुकामहासिलकरर हाहै।विशेषरूपसेदेशकेदक्षिणीऔरमध्यभागोंमेंगैर-सरकारीसंगठनों (एनजीओ) केतकनीकीमार्गदर्शनकेतहत,उद्यमियोंद्वारासरकारकेसमर्थनकेतहत,वर्मीकम्पोस्टिंगइकाइयोंकीएकमहत्वपूर्णसंख्यास्थापितकीगईहै।

वर्मीकम्पोस्टिंगकेप्रत्यक्षपर्यावरणीयऔरआर्थिकलाभहैंक्योंकियहस्थायीकृषिउत्पादनऔरकिसानोंकीआयमेंमहत्वपूर्णयोगदानदेताहै।कईगैरसर कारीसंगठन,समुदायआधारितसंगठन (सीबीओ),स्वयंसहायतासमूह (एसएचजी),ट्रस्टआदिहैंजोअपनेस्थापितआर्थिकऔरपर्यावरणीयलाभोंकेकारणवर्मीकंपोस्टिंगप्रौद्योगिकीकोबढ़ावादेनेकेलिएठोसप्रयासकररहेहैं ।

कृमिखाद

केंचुओंकोपालने/उपयोगकरकेकम्पोस्टकाउत्पादनवर्मीकम्पोस्टिंगतकनीककहलाताहै।इसतकनीककेतहत,केंचुएबायोमासखातेहैंऔरइसेपचेहुए रूपमेंउत्सर्जितकरतेहैंजिसेवर्मीकम्पोस्टिंगयावर्मीकम्पोस्टकेरूपमेंजानाजाताहै।यहछोटेऔरबड़ेपैमानेकेकिसानोंदोनोंकेलिएखादकेउत्पादनकेलि एसबसेसरलऔरलागतप्रभावीतरीकोंमेंसेएकहै।वर्मीकम्पोस्टउत्पादनइकाईकिसीभीऐसीभूमिमेंस्थापितकीजासकतीहैजोकिसीभीआर्थिकउपयो गकेअधीननहींहैबल्किछायादारऔरपानीकेठहरावसेमुक्तहै।स्थानभीजलसंसाधनकेनिकटहोनाचाहिए वर्मीकम्पोस्टिंग,जिसेसहीमायनेमें "कचरारूपीसोना" कहाजाताहै,जैविककृषिउत्पादनमेंप्रमुखइनपुटहै।सरलतकनीककेकारण,कईकिसानवर्मीकम्पोस्टउत्पादनमेंलगेहुएहैंक्योंकियहमिट्टीकेस्वास्थ्यको मजबूतकरताहै,मिट्टीकीउत्पादकताखेतीकीलागतकोकमकरतीहै।पोषकतत्वोंकीउच्चमात्राकेकारणवर्मीकम्पोस्टकीमांगमेंधीरे-धीरेवृद्धिहोरहीहै।

आयसृजनगतिविधिसेसंबंधितउत्पादकाविवरण

उत्पादकानाम	: :	केंचुआखाद
उत्पादपहचानकीविधि	:	यहगतिविधिपहलेसेहीकुछएसएचजीसदस्योंद्वाराकीजारहीहैऔरसमूहकेसदस्योंद्वारासामूहिक

	:	रूपसेतयकियागयाहै
एसएचजी/सीआईजी/क्लस्टरसदस्यों कीसहमति	: :	हाँ

उत्पादनप्रक्रियाओंकाविवरण

चरण		विवरण
चरण -1	::	प्रसंस्करण जिसमें घास फूस का 1 संग्रह, और जैविक कचरे का भंडारण शामिल है।
चरण-2	::	जैविक कचरे का बीस दिनों के लिए पशुओं के गोबर के घोल के साथ सामग्री को ढेर करके पूर्व पाचन। यह प्रक्रिया आंशिक रूप से सामग्री को पचाती है और केंचुआ खपत के लिए उपयुक्त है। मवेशियों के गोबर और बायोगैस के घोल को सुखाने के बाद इस्तेमाल किया जा सकता है। गीले गोबर का उपयोग वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन के लिए नहीं करना चाहिए।
चरण-3	::	केंचुआ क्यारी तैयार करना। वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने के लिए कचरे को डालने के लिए एक ठोस आधार की आवश्यकता होती है। ढीली मिट्टी कीड़े को मिट्टी में जाने देगी और पानी देते समय, सभी घुलनशील पोषक तत्व पानी के साथ मिट्टी में चले जाते हैं।
चरण-4	::	वर्मी-कम्पोस्ट संग्रह के बाद केंचुओं का संग्रह। पूरी तरह से कंपोस्ट की गई सामग्री को अलग करने के लिए कंपोस्ट की गई सामग्री को छान लें। आंशिक रूप से कम्पोस्ट की गई सामग्री को फिर से वर्मीकम्पोस्ट बेड में डाल दिया जाएगा।
चरण-5	::	नमी बनाए रखने और लाभकारी सूक्ष्मजीवों को बढ़ने देने के लिए वर्मी-कम्पोस्ट को उचित स्थान पर संग्रहित करना।
चरण-6		10X4X2 fit का ईंटों का पका गड्ढा बनाया जाएगा और उसे पानी से बचाने के लिए छप्पर का प्रावधान होगा

उत्पादनयोजनाकाविवरण

उत्पादनचक्र) दिनोंमें(	::	90दिन) वर्षमेंतीनचक्र(
प्रतिचक्रआवश्यकजनशक्ति) सं।(	::	1
कच्चेमालकास्रोत	::	घरऔरअपनेखेतोंसे
अन्यसंसाधनोंकास्रोत	::	मुक्तबाज़ार
कच्चामाल–आवश्यकमात्राप्रतिचक्र) किलो (प्रतिसदस्य	::	1800किलोप्रतिचक्र
प्रतिसदस्यप्रतिचक्र) किलो (अपेक्षितउत्पादन	::	900किलोग्रामप्रतिचक्र

विपणन/बिक्रीकाविवरण

संभावितबाजारस्थान	::	हिमाचलप्रदेशवनविभाग स्थानियबाज़ार अपनेखेतपरप्रयोगकरनेकेलिए
इकाईसेदूरी	::	
बाजारमेंउत्पादकीमांग/एस	::	HOFF (वनविभाग) उनकीनर्सरीकेलिएप्रचुरमात्रमेंवर्मी–कम्पोस्टखरीदरहाहै
बाजारकीपहचानकीप्रक्रिया	::	पीएमयूहिमाचलप्रदेशवनविभागद्वारास्वयंसहायतासमूहद्वाराउत्पादितवर्मी–कम्पोस्टकीखरीदकीसुविधाप्रदानकरेगा।
उत्पादकीमार्केटिंगरणनीति		एसएचजीसदस्यभविष्यमेंबेहतरबिक्रीमूल्यकेलिएअपनेगांवोंकेआसपासअतिरिक्तविपणनविकल्पतलाशेंगे।
उत्पादब्रांडिंग		सीआईजी/एसएचजीस्तरपरउत्पादकाविपणनसंबंधितसीआईजी/एसएचजीकीब्रांडिंगद्वाराकियाजाएगा।बादमेंइसIGAकोक्लस्टरस्तरपरब्रांडिंगकीआवश्यकताहोसकतीहै
उत्पाद "नारा"		"प्रकृतिकेअनुकूल"

स्वोटअनालिसिस

- ❖ **ताकत**
- गतिविधिपहलेसेहीकुछएसएचजीसदस्योंद्वाराकीजारहीहै
- एसएचजीकेप्रत्येकसदस्यकेपासप्रत्येकघरमें 2 से 8 तककेमवेशीहैं
- एसएचजीसदस्योंकेपरिवारउच्चमूल्यवालीफसलोंऔरसब्जियोंकीखेतीकररहेहैंजोपूरेवर्षकच्चेमालयानीकृषिजैविककचरेकीपर्याप्तउपलब्धताप्रदानकरतेहैं।
- उनकेखेतोंमेंआसानीसेउपलब्धकच्चामाल
- निर्माणप्रक्रियासरलहै
- उचितपैकिंगऔरपरिवहनमेंआसान
- परिवारकेअन्यसदस्यभीलाभार्थियोंकासहयोगकरेंगे
- उत्पादआत्म-जीवनलंबाहै
- ❖ **कमज़ोरी**
- विनिर्माणप्रक्रिया/उत्पादपरतापमान,आर्द्रता,नमीकाप्रभाव।
- तकनीकीजानकारीकाअभाव
- ❖ **अवसर**
- जैविकएवंप्राकृतिकखेतीकेप्रतिकिसानोंमेंजागरूकताकेकारणवर्मीकम्पोस्टकीबढ़तीमांग
- वर्मी - कम्पोस्टकाअपनेखेतमेंप्रयोगकरनेसेमृदास्वास्थ्यमेंसुधारऔरवृद्धितथागुणवत्तापूर्णकृषिउत्पादकाउत्पादनहोगाजोबेहतरमूल्यप्रदानकरेगा।
- रसोईघरसेबाहररहगएघरेलूकचरेसहितजैविककचरेकासर्वोत्तमउपयोग
- एचपीफॉरेस्टकेसाथमार्केटिंगगठजोड़कीसंभावना
- ❖ **धमकी/जोखिम**
- अत्यधिकमौसमकेकारणउत्पादनचक्रकेटूटनेकीसंभावना
- प्रतिस्पर्धीबाजार

- प्रशिक्षण/क्षमतानिर्माणऔरकौशलउन्नयनमेंभागीदारीकेप्रतिलाभार्थियोंकेबीचप्रतिबद्धताकास्तर

सदस्योंकेबीचप्रबंधनकाविवरण

- उत्पादन–कच्चेमालकीखरीदसहितव्यक्तिगतसदस्योंद्वाराइसकाध्यानरखाजाएगा
- गुणवत्ताआश्वासन–सामूहिकरूपसे
- सफाईऔरपैकेजिंग–सामूहिकरूपसे
- मार्केटिंग–सामूहिकरूपसे
- इकाईकीनिगरानी–सामूहिकरूपसे

अर्थशास्त्रकाविवरण

क्र.सं	विवरण	इकाइयों	मात्रा/संख्या	लागत (रु.)	वर्ष 1	वर्ष 2	वर्ष 3	वर्ष 4	वर्ष 5
एक।	**पूंजी लागत**								
ए.1	**पिटएवं शेड का निर्माण**								
1	गड्ढे निर्माण के साथ-साथ श्रम लागत (आंतरिकगड्ढे का आकार 10ftX4ftX2ft होगा)	प्रतिसदस्य	8	6000	48000	0	0	0	0
2	कवर शेड का निर्माण	प्रतिसदस्य	8	4000	32000				
	उप-योग (ए.1)				**80000**	**0**	**0**	**0**	**0**
.2	**यंत्रावली और उपकरण**								
3	औज़ार, उपकरण, तराजू आदि।	प्रतिसदस्य	8	2000	16000	0	0	0	0
	उप-योग (ए.2)				**16000**	**0**	**0**	**0**	**0**
	कुल पूंजीगत लागत (ए.1+ए.2)				**96000**	**0**	**0**	**0**	**0**
बी	**आवर्ती लागत**								
4	बीज केंचुआ	प्रति किग्रा	8	500	4000	0	0	0	0

5	घोल/गोबर/अपशिष्टकी खरीद की लागत	टन	38	900	34200	35910	37706	39591	41570
6	श्रम लागत	प्रतिटन	19	700	13300	13965	14663	15396	16166
7	पैकिंग सामग्री	नहीं।	3200	2	6400	6720	7056	7409	7779
8	अन्य हैंडलिंग शुल्क	प्रतिटन	38	150	5700	5985	6284	6598	6928
सी	**अन्य शुल्क**								
9	बीमा	एल/एस			0	0	0	0	0
10	ऋण पर ब्याज	प्रतिवर्ष		2 प्रतिशत					
	कुल आवर्ती लागत				**63600**	**62580**	**65709**	**68994**	**72444**
	कुललागत = पूंजीगत और आवर्ती				**159600**	**62580**	**65709**	**68994**	**72444**
डी	**वर्मीकम्पोस्टिंग से आय**								
11	**वर्मीकम्पोस्ट कीबिक्री**	टन	38	**6000**	**228000**	**239400**	**151370**	**263939**	**277135**
12	**केंचुए की बिक्री**					**4000**	**8000**	**8000**	**8000**
13	**कुल मुनाफा**				**228000**	**243400**	**259370**	**271939**	**285135**
14	शुद्धरिटर्न (सीबी)				164400	180820	193661	202944	212691

नोट–चूंकिश्रमकार्यस्वयंसहायतासमूहकेसदस्योंद्वाराकियाजाएगाऔर उनके स्थान पर पहले से उपलब्ध घोल / गोबर / अपशिष्ट और ये सामग्री उनके द्वारा प्राप्त नहींकी जाएगी , इसलिए, आवर्तीलागत (श्रम लागत, घोल / गोबर / अपशिष्ट की खरीद की लागत)) की कुल आवर्ती लागत से कटौती की जा सकती है।

आर्थिकविश्लेषण

क्रमांक	**विवरण**	**वर्ष 1**	**वर्ष 2**	**वर्ष 3**	**वर्ष 4**	**वर्ष 5**
1	पूंजी लागत	**96000**	**0**	**0**	**0**	**0**
2	आवर्ती लागत	**63600**	**62580**	**65709**	**68994**	**72444**

3	कुल लागत	**159600**	**62580**	**65709**	**68994**	**72444**
4	कुल लाभ	**228000**	**243400**	**259370**	**271939**	**285135**
5	**शुद्ध लाभ**	164400	180820	193661	202944	212691

शुद्धलाभकावितरण–उत्पादनमेंहिस्सेदारीकेअनुसार

आर्थिकविश्लेषणकेनिष्कर्ष

- प्रत्येकसदस्यकेलिएगड्ढेकाआकार 10X4X2 फीटकीयोजनाबनाईगईहै।
- वर्मीकम्पोस्टकीउत्पादनलागतरु. 3.2 प्रतिकिग्रा
- वर्मी -कम्पोस्ट (रूढ़िवादीपक्ष) कीबिक्रीरु. 6 प्रतिकिलो
- रुपयेकाशुद्धलाभहोगा। 2.7 प्रतिकिग्रा
- यहप्रस्तावितहैकिप्रत्येकसदस्यप्रतिवर्ष 2.7 टनवर्मी–कम्पोस्टकाउत्पादनकरेगाजिसकेपरिणामस्वरूप 21.6टनकाउत्पादनहोगाएकवर्षमेंस्वयंसहायतासमूहकेसभी 8सदस्योंद्वारावर्मी -कम्पोस्ट।
- केंचुआकीकीमतरुपयेरखीगईहै। 500.00 प्रतिकिग्रा
- दूसरेदूसरेवर्षोंकेदौरान , बिक्रीकेलिएअतिरिक्तमिट्टीकाकामहोगा (क्योंकियहवर्मी–कम्पोस्टकेउत्पादनकीप्रक्रियाकेदौरानकईगुनाबढ़जाएगा)
- वर्मी–खादबनानाएकलाभदायक IGA हैऔरइसे SHG सदस्योंद्वारालियाजासकताहै।

फंडकीआवश्यकता:

क्रमांक	विवरण	कुल राशि (रु.)	परियोजना का समर्थन	एसएचजी योगदान
1	कुल पूंजी लागत	96000	72000	24000
2	कुल आवर्ती लागत	63600	0	63600
3	प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन	50000	50000	0
	कुल =	**209600**	**122000**	**87600**

टिप्पणी-

- **पूंजीगतलागत - पूंजीगतलागत**का 75% परियोजनाकेतहतकवरकियाजाएगा
- **आवर्ती लागत** - एसएचजी/सीआईजीद्वारावहनकियाजाना।
- **प्रशिक्षण/क्षमतानिर्माण/कौशलउन्नयन**–परियोजनाद्वारावहनकियाजाएगा

फंडकेस्रोत:

परियोजना का समर्थन;	• पूंजीगतलागतका 75% पिट और शेड के निर्माण के लिए उपयोग किया जाएगा (आकार 10ftX4ftX2ft होगा) • SHG बैंक खाते में 1 लाख रुपये तक जमा किए जाएंगे। • प्रशिक्षण/क्षमतानिर्माण/कौशलउन्नयनलागत। • डीएमयूद्वारा 5% ब्याजदरकीसब्सिडीसीधेबैंक/वित्तीयसंस्थानमेंजमाकीजाएगीऔरयहसुविधाकेवलतीनसालकेलिएहोगी।एसएचजीकोमूलराशिकीकिश्तोंकाभुगताननियमितआधारपरकरनाहोताहै।	खरीद संबंधित डीएमयू /एफसीसीयू द्वारा सभी औपचारिक औपचारिकताओं का

		पालन करने के बाद की जाएगी।
एसएचजी योगदान	• पूंजीगतलागतका 25% स्वयंसहायतासमूहद्वारावहनकियाजाएगा। • एसएचजीद्वारावहनकीजानेवालीआवर्तीलागत	

बैंकऋणचुकौती

यदिऋणबैंकसेलियागयाहैतोयहनकदऋणसीमाकेरूपमेंहोगाऔरसीसीएलकेलिएपुनर्भुगतानअनुसूचीनहींहै; हालांकि, सदस्योंसेमासिकबचतऔरचुकौतीरसीदसीसीएलकेमाध्यमसेभेजीजानीचाहिए।

- सीसीएलमें,एसएचजीकेबकायामूलधनकाबैंकोंकोसालमेंएकबारपूराभुगतानकियाजानाचाहिए।ब्याजराशिकाभुगतानमासिकआधारपरकियाजानाचाहिए।
- सावधिऋणोंमें, चुकौतीबैंकोंमेंचुकौतीअनुसूचीकेअनुसारकीजानीचाहिए।
- परियोजनासहायता–डीएमयूद्वारा 5%
  ब्याजदरकीसब्सिडीसीधेबैंक/वित्तीयसंस्थानमेंजमाकीजाएगीऔरयहसुविधाकेवलतीनसालकेलिएहोगी। SHG/CIG
  कोनियमितआधारपरमूलधनकीकिश्तोंकाभुगतानकरनाहोगा

प्रशिक्षण/क्षमतानिर्माण/कौशलउन्नयन

प्रशिक्षण/क्षमतानिर्माण/कौशलउन्नयनलागतपरियोजनाद्वारावहनकीजाएगी।

निम्नलिखितकुछप्रशिक्षण/क्षमतानिर्माण/कौशलउन्नयनप्रस्तावित/आवश्यकहैं:

- परियोजनाअभिविन्याससमूहकागठन/पुनर्गठन
- समूहअवधारणाऔरप्रबंधन
- आईजीए (सामान्य) कापरिचय
- विपणनऔरव्यवसाययोजनाविकास
- बैंकक्रेडिटलिंकेजऔरउद्यमविकास
- एसएचजी/सीआईजीकाएक्सपोजरदौरा–राज्यकेभीतरऔरराज्यकेबाहर

निगरानीतंत्र

- वीएफडीएसकीसामाजिकलेखापरीक्षासमितिआईजीएकीप्रगतिऔरप्रदर्शनकीनिगरानीकरेगीऔरप्रक्षेपणकेअनुसारइकाईकेसंचालनकोसुनिश्चितकरनेकेलिएयदिआवश्यकहोतोसुधारात्मककार्रवाईकासुझावदेगी।
- एसएचजीकोप्रत्येकसदस्यकेआईजीएकीप्रगतिऔरप्रदर्शनकीसमीक्षाकरनीचाहिएऔरप्रक्षेपणकेअनुसारइकाईकेसंचालनकोसुनिश्चितकरनेकेलिएयदिआवश्यकहोतोसुधारात्मककार्रवाईकासुझावदेनाचाहिए।

केंचुआखादबनानापरियोजनाकीलागतहै

पूंजीगतलागत = 96000/-

आवर्तीलागत = 63600/-

केंचुआखादबनानापरियोजनाकेलिएकुललागत(पूंजीगत+आवर्ती) = 159600/-

प्रशिक्षण लागत (परियोजना द्वारा)=50000/-

क्रमसंख्या	**व्यवसाय योजना**	**पूंजीगतलागत**	**आवर्तीलागत**	**परियोजनाकाहिस्सा(75% पूंजीगत लागत)**	**लाभार्थीअंशदान(25%पूंजीगत लागत +आवर्ती लागत)**	**कुल लागत**
1.	केंचुआखादबनाना	96000/-	63600/-	72000/-	87600/-	159600/-
	कुल	**96000/-**	**63600/-**	**72000/-**	**87600/-**	**159600/-**

फोटो के साथ स्वयं सहायता समुह सदस्यों का विवरण

क्र स	नाम	पद	वर्ग	उम्र	शैक्षणिक योग्यता	मोबाइल नंबर
1.	श्रीमती शीला देवी w/o [illegible]	प्रधान	सामान्य	44	5th	7807337714
2.	श्रीमती कमी देवी w/o रणजीत	सचिव	—"—	43	8th	9418648707
3.	श्रीमती रीना देवी w/o महेन्द्र	कोषाध्यक्ष	—"—	41	12th	9805285156
4.	श्रीमती गुरनाम देवी w/o बिशनु	सदस्य	—"—	45	5th	8219054468
5.	श्रीमती निर्मला देवी w/o राम प्रकाश सिंह	—"—	—"—	60	—	8580996720
6.	श्रीमती सत्या देवी w/o चमन सिंह	—"—	—"—	40	5th	—
7.	श्रीमती धर्मी देवी w/o ज्ञान सिंह	—"—	—"—	47	—	—
8.	श्रीमती कमला देवी w/o प्यार सिंह	—"—	—"—	53	—	905127605
9.						
10.						
11.						
12.						
13.						
14.						
15.						
16.						

हस्ताक्षर कमी देवी

सचिव स्वयं सहायता समूह
अंजलि स्वयं सहायता समूह
गांव खाला म्योठ डा. जनाली,
जिला बिलासपुर हि०प्र०

हस्ताक्षर शीला देवी

प्रधान स्वयं सहायता समूह
अंजलि स्वयं सहायता समूह
गांव खाला म्योठ डा. जनाली,
जिला बिलासपुर हि०प्र०

हस्ताक्षर

सचिव ,वन ग्रामीण विकास समिति

हस्ताक्षर

प्रधान वन ग्रामीण विकास समिति, गाव म्योठ,ग्राम पंचायत टरवाड, तह0 श्री नैना देवी जी
जिला-बिलासपुर (हि0प्र0)

हस्ताक्षर

वन रक्षक

हस्ताक्षर

वन खण्ड अधिकारी

Range Forest Officer
Swarghat [illegible] Range
Bilaspur Forest
वन परिक्षेत्र अधिकारी

डीएमयू द्वारा स्वीकृत